

डॉ. डेविड बाउर, आगमनात्मक बाइबिल अध्ययन, व्याख्यान 28, 1 पीटर, पुस्तक सर्वेक्षण

© 2024 डेविड बाउर और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. डेविड बाउर आगमनात्मक बाइबिल अध्ययन पर अपने शिक्षण में हैं। यह सत्र 28, 1 पीटर, पुस्तक सर्वेक्षण है।

अब हम 1 पतरस, पतरस की पहली पत्री की ओर बढ़ने जा रहे हैं।

हम वास्तव में 1 पतरस को पूरा करने में सक्षम नहीं होंगे, क्योंकि हम पूरी किताब की एक-एक पंक्ति पर काम कर सकते हैं जैसा कि हम जेम्स के साथ करने में सक्षम थे, लेकिन हम 1 पतरस की पुस्तक का सर्वेक्षण करने जा रहे हैं और एक महत्वपूर्ण बात पर काम कर रहे हैं। 1:1 और 2 में मुद्दा, और फिर व्याख्या भी करें, एक विचार का पता लगाएं और पहली इकाई की व्याख्या करें, जो वास्तव में यहां 1 पतरस में एक मूलभूत इकाई है, यानी 1 पतरस 1:3 से 12 तक। अब, जैसा कि मैं पहले उल्लेख किया गया है, सर्वेक्षण में स्पष्ट अवलोकन करके शुरुआत करना और फिर वहां से आगे बढ़ना अच्छा है। हम पीछे खड़े हैं और 1 पीटर में हमारे पास जो कुछ है उसका व्यापक विवरण प्राप्त करने का प्रयास करते हैं।

हम देखेंगे कि स्पष्ट रूप से 1:1 और 2 में अभिवादन या अभिवादन से शुरू होता है, पीटर, जो यीशु मसीह का एक प्रेरित है, जो पोंटस, गैलाटिया, कप्पाडोसिया, एशिया और बिथिनिया में बिखरे हुए निर्वासित लोगों के लिए है, जिन्हें चुना और नियुक्त किया गया है। पिता परमेश्वर और यीशु मसीह की आज्ञाकारिता और उसके लहू से छिड़कने के कारण आत्मा द्वारा पवित्र किया गया। कृपा और शांति आप पर बहुगुणित हो। और फिर यह भी बिल्कुल स्पष्ट है कि हमारे पास 5:12 से 14 तक एक पत्र-पत्रिका निष्कर्ष है।

सिल्वानस, एक वफादार भाई, जैसा कि मैं उसका सम्मान करता हूं, मैंने आपको संक्षेप में लिखा है, उपदेश और घोषणा करते हुए कि यह भगवान की सच्ची कृपा है, इसमें दृढ़ता से खड़े रहें। वह जो बेबीलोन में है, जो इसी प्रकार चुनी गई है, तुम्हें नमस्कार भेजती है, और मेरा पुत्र मरकुस भी। प्रेम के चुम्बन से एक दूसरे का स्वागत करें।

आप सभी को शांति जो मसीह में हैं। अब, निःसंदेह, असली मुद्दा पत्र के मुख्य भाग से संबंधित है। मुझे लगता है कि यह जेम्स की तुलना में थोड़ा अधिक स्पष्ट है।

जो चीज़ मैं यहाँ देख रहा हूँ, फिर से, हम स्पष्ट अवलोकन करके शुरू करते हैं, वह यह है कि वह वास्तव में एक प्रकार की स्तुतिगान से शुरू करते हैं, एक ऐसा अंश जो पूरी तरह से संकेतात्मक है। इस परिच्छेद में कोई उपदेश, कोई अनिवार्यता नहीं है, और मैं यहां 1:3 से 12 तक का उल्लेख कर रहा हूँ, एक परिच्छेद जिसे मैंने ईसाइयों के लिए ईश्वर की दया का शीर्षक दिया है। हालाँकि, 1:13 से शुरू करके हमारे पास उपदेश हैं।

वास्तव में, आपके पास 1:13 से लेकर 5:11 तक उपदेश हैं। हम ध्यान दें, संयोग से, 1:13 कारण संयोजन से शुरू होता है, इसलिए एक बार फिर, संभवतः संकेत से आंदोलन का संकेत मिलता है, यानी, मामला क्या है, इसलिए, आपको इस आधार पर क्या करना चाहिए इसका। यदि, वास्तव में, यह मामला है, जैसा कि हम 1:13 से 5:11 तक देखते हैं, जो निश्चित रूप से, पुस्तक में एक काफी व्यापक इकाई है, मैं ध्यान देता हूँ कि 1:13 से 2:10 तक उपदेश गैर-स्थितिजन्य हैं। वे उन विशिष्ट स्थितियों को संबोधित नहीं करते जिनका सामना पाठक कर रहे हैं या जिनका उन्हें सामना करना पड़ सकता है।

उपदेश बहुत सामान्य प्रकार के होते हैं। मूलतः, आपके पास पवित्रता का उपदेश है। यह निश्चित रूप से 1:16 में पाया जाता है, वास्तव में 1:14 और 1:15 विशेष रूप से, क्योंकि आज्ञाकारी बच्चे आपके पूर्व अज्ञान के जुनून के अनुरूप नहीं होते हैं, लेकिन जिसने आपको बुलाया वह पवित्र है, पवित्र रहें तुम अपने सारे आचरण में पवित्र बनो, क्योंकि लिखा है, कि तुम पवित्र बनो, क्योंकि मैं पवित्र हूँ।

और प्रेम करो, 1:22, और सत्य की आज्ञाकारिता के द्वारा अपने मन को शुद्ध करके, भाइयों के प्रति निष्कपट प्रेम के कारण एक दूसरे से हृदय से प्रेम रखो। इसीलिए मैं 1:13 से 2.10 तक पवित्र जीवन के लिए एक सामान्य आह्वान के रूप में संदर्भित करता हूँ। वास्तव में, हम इसमें थोड़ा सा संशोधन कर सकते हैं और पवित्र प्रेम के लिए एक सामान्य आह्वान कह सकते हैं।

लेकिन पवित्र जीवन, वास्तव में, मुझे लगता है कि यहाँ उपयुक्त है क्योंकि मेरे विचार से, पवित्रता का उपदेश यहाँ का प्रमुख उपदेश है। एक अर्थ में प्रेम का उपदेश उसके अधीन है। लेकिन ध्यान देने वाली बात, जैसा कि मैंने कुछ देर पहले बताया था, यह है कि ये सामान्य उपदेश हैं।

पीटर वास्तव में उन्हें जीवन की विशिष्ट परिस्थितियों में लागू करने के लिए कुछ नहीं करता है। हालाँकि, यह सब 2:11 से 5:11 में बदल जाता है, जहाँ हमारे पास जीवन के विशिष्ट क्षेत्रों या जीवन के विशिष्ट मुद्दों पर पवित्रता के सामान्य आह्वान के विशिष्ट अनुप्रयोग हैं। अब, इस सामग्री के भीतर, वह वास्तव में उद्देश्य के एक बयान के साथ एक सामान्य घोषणा के साथ शुरू होता है।

2:11 और 12, हे प्रिय, मैं तुम से परदेशी और निर्वासित होकर विनती करता हूँ, कि तुम शरीर की उन लालसाओं से दूर रहो जो तुम्हारी आत्मा के विरुद्ध युद्ध छेड़ती हैं। अन्यजातियों के बीच अच्छा आचरण बनाए रखें, ताकि मामले में, और यहां उद्देश्य का एक बयान दिया गया है, ताकि यदि वे आपके खिलाफ गलत काम करने वालों के रूप में बोलें, तो वे आपके अच्छे कामों को देख सकें और मुलाक़ात के दिन भगवान की महिमा कर सकें। फिर 2:13 से 3:7 में, हमारे पास सामाजिक संरचनाओं के प्रति समर्पण करने के लिए उपदेश हैं।

यह वास्तव में, इस सामग्री से शुरू होता है, क्योंकि हम वास्तव में आम तौर पर उस तरह के विवरण में नहीं जाते हैं जिसमें मैं अब पुस्तक सर्वेक्षण में जाने जा रहा हूँ, लेकिन चूंकि हम इसका पता लगाने में सक्षम नहीं होने जा रहे हैं बाद में विस्तार से सोचा गया, इस विशेष बिंदु पर, मैं

इसके बारे में यहां कुछ कहना चाहता हूं, और वह यह है कि, वास्तव में, इसे ही हम घरेलू कोड कहते हैं। नए नियम की पत्रियों में आपके पास यह अक्सर पाया जाता है, या कम से कम कभी-कभार नहीं। आपके पास यह इफिसियों और कुलुस्सियों में भी है, लेकिन यहां वह वास्तव में शुरू होता है, और घरेलू कोड 2:13 से 3.6 में पाया जाता है, जहां आपके पास 2:13 से 17 में है, प्रत्येक मानव संस्था के अधीन रहने का एक उपदेश, जो वह फिर आगे बढ़ता है और नौकरों को निर्देश के संदर्भ में निर्दिष्ट करता है।

खैर, वास्तव में, वह घर की संस्था के संदर्भ में निर्दिष्ट करता है और इसलिए, 2:18 से 25 में नौकरों, 3:1 से 5 में पत्नियों, और 3:7 में पतियों को संबोधित करता है। फिर, 3:8 से 4:19 में, हमारे पास उत्पीड़न या उत्पीड़कों के प्रति उचित प्रतिक्रिया के लिए उपदेश हैं, और फिर अंत में, 5:1 से 11 में, एक ओर साथी ईसाइयों और दूसरी ओर भगवान के प्रति विनम्र समर्पण के बारे में उपदेश हैं। . इसलिए, जैसा कि मैं कहता हूं, 1 पीटर को अपेक्षाकृत स्पष्ट रूप से प्रस्तुत किया गया है, और यही पुस्तक की गति प्रतीत होती है। कम से कम, यह 1 पीटर की वृहत संरचना को समझने का एक तरीका है।

अब, यहां मुख्य इकाइयों और उपइकाइयों की पहचान करने के बाद, हम आगे बढ़ते हैं और उन प्रमुख संरचनात्मक संबंधों पर ध्यान देते हैं जो समग्र रूप से पुस्तक में सक्रिय हैं। और इसलिए, हम 1:1 और 2 में इस प्रारंभिक कथन से शुरुआत करते हैं, जिसे हम पहले ही पहचान चुके हैं। पीटर, पोंटस, गैलाटिया, कप्पाडोसिया, एशिया और बिथिनिया में फैले हुए निर्वासितों के लिए यीशु मसीह का एक प्रेरित, जिसे परमेश्वर पिता द्वारा चुना और नियत किया गया था और यीशु मसीह की आज्ञाकारिता और उसके खून से छिड़कने के लिए आत्मा द्वारा पवित्र किया गया था, हो सकता है अनुग्रह और शांति तुम पर बहुगुणित हो।

यहां ध्यान दें, और यह हमेशा एक अच्छा विचार है, संयोग से, विशेष रूप से इंगित करने के लिए कि आप किसी रिश्ते को कैसे कार्य करते हुए देखते हैं। जब बात आती है, किसी पुस्तक के भीतर, जब यहां तैयारी के अहसास की बात आती है, जिसमें विशिष्टता भी शामिल होती है, जैसा कि हम बस एक क्षण में देखेंगे, हम पृष्ठभूमि की विशिष्टताओं के संदर्भ में जो शामिल है उसे सामने लाने का प्रयास करते हैं। और आपके पास वास्तव में तीन हैं, आपके पास यहां वास्तव में तीन प्रकार की पृष्ठभूमि है, या पृष्ठभूमि के तीन पहलू प्रस्तुत किए गए हैं।

लेखक अपनी पहचान के संदर्भ में और अपने कार्य या स्थिति के संदर्भ में, यीशु मसीह के एक प्रेरित, पीटर के रूप में खुद को प्रस्तुत करता है। प्राप्तकर्ताओं को उनके स्थान, यानी उनकी स्थिति, पोंटस, गलाटिया, कप्पाडोसिया, एशिया और बिथिनिया में उनके स्थान के साथ फैलाव के निर्वासितों के रूप में वर्णित किया गया है। और फिर, उनकी स्थिति के संदर्भ में, परमपिता परमेश्वर द्वारा चुने और नियत किए गए, यीशु मसीह के रक्त के छिड़काव के साथ आज्ञाकारिता के लिए आत्मा द्वारा पवित्र किए गए।

और फिर, निःसंदेह, आपको नमस्कार, अनुग्रह और शांति कई गुना बढ़ जाएगी। अब, इस परिचयात्मक कथन में जो बात यहां सामने आती है वह पाठकों का विवरण है, जो काफी दिलचस्प है, और वास्तव में, हम कुछ ही मिनटों में इसकी व्याख्या देखने जा रहे हैं। लेकिन वह

उन्हें फैलाव के निर्वासन के रूप में संदर्भित करता है जिन्हें परमेश्वर पिता द्वारा चुना गया है, और आत्मा द्वारा पवित्र किया गया है।

मेरे निर्णय में, हमारे पास यहां पाठकों और उनकी ईसाई पहचान का एक सामान्य विवरण है, जिसे वह शेष पुस्तक के माध्यम से विशिष्ट करता है। कहने का तात्पर्य यह है कि, पुस्तक के शेष भाग में, पत्र के मुख्य भाग में, जेम्स आगे बढ़ता है और ठीक वही विकसित करता है जो इसका अर्थ है, विशेष रूप से उनके लिए फैलाव के निर्वासन का क्या अर्थ है, उनके लिए चुना जाना और नियति होना परमेश्वर पिता और आत्मा द्वारा पवित्र किया गया। शेष पुस्तक उनकी निर्वासित स्थिति, ईश्वर द्वारा चुनी और नियत की गई उनकी स्थिति और आत्मा द्वारा पवित्र की गई उनकी स्थिति के बारे में विशिष्ट सामग्री देती है।

हम कुछ ही मिनटों में देखेंगे कि वास्तव में वह बाद के पत्र में पाठकों की निर्वासन और विदेशी भाषा का उपयोग करता है। इसलिए, वह इस प्रकार की भाषा को अपनाता है, लेकिन पत्र के उन हिस्सों में भी जहां एलियंस या निर्वासितों या निर्वासन की भाषा नहीं पाई जाती है, वहां भी, वह वास्तव में फैलाव के निर्वासितों के रूप में उनकी स्थिति विकसित करता है, उनकी स्थिति को चुने हुए के रूप में विकसित करता है। ईश्वर द्वारा, जैसा कि यीशु मसीह की आज्ञाकारिता और उसके खून से छिड़कने के लिए पिता ईश्वर द्वारा नियत किया गया था। और निःसंदेह, हम इस संबंध में प्रश्न उठाते हैं।

1:1 के पृष्ठभूमि कथन में प्रत्येक मुख्य तत्व का क्या अर्थ है, और प्रत्येक पुस्तक के मुख्य भाग के लिए कैसे तैयारी करता है और शेष पुस्तक को रोशन करता है? 1:1 और 2 में ईसाई पहचान के इस सामान्य विवरण के प्रत्येक तत्व का क्या अर्थ है, और 1 पत्रस के बाकी हिस्सों में प्रत्येक तत्व का विकास कैसे हुआ है? अब, फिर से, मुझे यहां कुछ का उल्लेख करने दीजिए क्योंकि यहां इसका उल्लेख करना सुविधाजनक है, और शायद मेरे पास इसे फिर से उल्लेख करने का अवसर है, लेकिन वह पहले से ही यहां परिचय में है। हम देखते हैं कि इस पुस्तक की प्राथमिक चिंताओं में से एक, और मैं तर्क दूंगा कि 1 पीटर की प्राथमिक चिंता ईसाई पहचान है। वास्तव में, 1 पत्रस का व्यापक विषय या विषय ईसाई पहचान है। ईसाई होने का क्या मतलब है? खैर, हम यहां तर्कसंगत प्रश्नों, क्यों प्रश्नों पर चलते हैं।

लेखक ने पुस्तक का परिचय इस प्रकार क्यों किया? मुझे लगता है कि हमें यहां यह कहना चाहिए कि लेखक ने ईसाई पहचान के इस विवरण को अपनी पुस्तक में क्यों शामिल किया, और उसने इस विवरण को उसी तरह क्यों विकसित किया जैसा कि उसने पूरी पुस्तक में किया है? फिर भी, निश्चित और तर्कसंगत प्रश्नों के उत्तरों के निहितार्थ, धार्मिक निहितार्थ क्या हैं? अब, हमने ब्रेकडाउन में नोट किया है कि हमारे पास 1:3 से 12 के बीच एक प्रमुख आंदोलन हो सकता है, मसीह के माध्यम से ईसाइयों के लिए भगवान की भलाई की घोषणा, और उपदेश, वास्तव में परिणामी उपदेश, उपदेश जो उससे निकलते हैं। चूंकि यह मामला है, इसलिए, आपको इसी तरह प्रतिक्रिया देनी चाहिए। 1:13 से 5:11 तक आपको इसे इस प्रकार जीना चाहिए। अब, निस्संदेह, 1:13 से 5:11 के भीतर हमारे पास क्या है, और हमने इसे जेम्स में भी देखा, कारण-पुष्टि की पुनरावृत्ति, वास्तव में उपदेशात्मक पैटर्न, कारण के बीच यह लगातार आगे-पीछे होता रहता है, जो सांकेतिक है, और प्रभाव, जो अनिवार्य है।

अब, हम निश्चित रूप से, इसके संबंध में प्रश्न उठाते हैं, और यह, निश्चित रूप से, अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि इसमें ईसाई जीवन की यही संरचना, ईसाई जीवन की संरचना शामिल है। इस पुस्तक के अनुसार, 1:3 से 12 में मसीह के माध्यम से ईसाइयों के लिए ईश्वर की भलाई की घोषणा का क्या अर्थ है? ये किस विशिष्ट तरीके से 1:13 से 5:11 में उपदेशों का कारण बनते हैं, उत्पन्न करते हैं और उपदेशों की ओर ले जाते हैं? 1:13 से 5:11 तक धर्मशास्त्रीय दावे वहां उपदेशों का कारण या उत्पादन कैसे करते हैं? निःसंदेह, यह उपदेशात्मक पैटर्न पर आधारित है। उपदेश देने की घोषणा के इस पैटर्न में प्रमुख तत्व क्या हैं, और इन प्रमुख तत्वों में से प्रत्येक का अर्थ क्या है, और वे एक-दूसरे से कैसे संबंधित हैं और एक-दूसरे को कैसे रोशन करते हैं? मुझे लगता है कि यह बहुत स्पष्ट है कि यदि आप वास्तव में इस प्रश्न का अच्छी तरह से और विस्तृत रूप से उत्तर देते हैं, तो आपको इस पुस्तक के संदेश की दृढ़ समझ है।

तर्कसंगत प्रश्न: लेखक ने मसीह के माध्यम से ईसाइयों के लिए ईश्वर की भलाई के बारे में इस धार्मिक कथन की शुरुआत क्यों की और इस प्रकार इसे 1:13 से 5:11 तक अपने उपदेश के आधार के रूप में उपयोग किया? उसने 1:13 से 5:11 तक घोषणा उपदेश पैटर्न के प्रमुख तत्वों को क्यों शामिल किया? और फिर, इन सभी प्रश्नों के उत्तर के धार्मिक निहितार्थ क्या हैं? फिर, मुझे लगता है, हमारे पास 1:13 से 5:11 के भीतर है, जो निश्चित रूप से, पुस्तक के बड़े हिस्से को नियंत्रित करता है, पुस्तक की आधी से अधिक सामग्री, एक प्रकार का विशिष्टता। 1:13 से 2:10 में, हमारे पास पवित्रता के लिए सामान्य आह्वान है, जिसमें पवित्र प्रेम भी शामिल है। जैसा कि हमने उल्लेख किया है, यह 1:13 से 2:10 तक किसी विशिष्ट स्थिति से संबंधित नहीं है, और उपदेश स्वयं सामान्य, पवित्रता और प्रेम हैं।

लेकिन 2:11 से 5:11 में वह जो करता है वह विशेष रूप से इंगित करना है कि पवित्रता और प्रेम का क्या अर्थ है क्योंकि यह विशेष परिस्थितियों पर लागू होता है। दूसरे शब्दों में, वह पवित्रता की धारणा को विशिष्ट बनाता है। पवित्रता का वास्तव में क्या मतलब है? पवित्रता की भौतिक सामग्री क्या है? जीवन की विशिष्ट परिस्थितियों में पवित्रता कैसे दिखेगी? वह 2:11 से 5:11 तक इसका वर्णन करता है। हमारे यहां सामान्य कॉल के विशिष्ट अनुप्रयोग या सामाजिक संरचनाओं, उत्पीड़न या उत्पीड़कों, और दूसरों और भगवान के प्रति समर्पण के मुद्दे जैसी विशिष्ट चीजों से संबंधित सामान्य विवरण हैं।

और फिर, यहाँ प्रश्न। 1:13 से 2:10 में पवित्रता के लिए सामान्य आह्वान या विवरण का क्या अर्थ है? और 2:11 से 5:11 में सामाजिक संरचनाओं, उत्पीड़न और अधीनता के साथ-साथ अन्य विशिष्ट चिंताओं के क्षेत्रों में विशिष्ट अनुप्रयोग की तर्ज पर इसे किस सटीक तरीके से विकसित किया गया है? 1:13 से 2:10 में पवित्रता का यह सामान्य आह्वान या वर्णन इन विशिष्ट अनुप्रयोगों को कैसे उजागर करता है? और ये विशिष्ट एप्लिकेशन पवित्रता और प्रेम के सामान्य आह्वान को विशिष्ट सामग्री कैसे देते हैं और कैसे रोशन करते हैं? इस प्रकार लेखक पवित्रता के सामान्य आह्वान या वर्णन से इन विशिष्ट अनुप्रयोगों की ओर क्यों चला गया? और उन्होंने पवित्रता और प्रेम के संबंध में सामान्य चिंताओं को उस तरह से क्यों विकसित किया जैसा कि उनके पास है? और फिर धार्मिक निहितार्थ। मुझे लगता है कि इस पुस्तक में हमारी कई पुनरावृत्तियाँ हैं।

जैसा कि आप देख सकते हैं, यहाँ पीड़ा की पुनरावृत्ति है, और पद्य संदर्भ यह दर्शाते हैं कि वह विषय कितना व्यापक है। इसके अलावा, आपके पास बुलाए गए, चुने गए, और नियति की पुनरावृत्ति और आशा की पुनरावृत्ति है। अब, आशा है, आपने ध्यान दिया होगा, इतनी बार प्रकट नहीं होता है।

इसका संपूर्ण पुस्तक में वितरण है। मैंने यहां एक निर्णय लिया है जिसकी व्याख्या करने के बाद या तो इसकी पुष्टि की जाएगी या सुधार किया जाएगा, हालांकि, आशा है, हालांकि यह शब्द स्वयं उतनी बार प्रकट नहीं होता है, मान लीजिए, जैसा कि पीड़ित विषय में होता है, कि यह बहुत महत्वपूर्ण है, इस पुस्तक के विचार में इसकी भूमिका काफी महत्वपूर्ण हो सकती है। और फिर, महिमा या महिमा की पुनरावृत्ति भी।

इसको लेकर हम फिर सवाल उठाते हैं। इनमें से प्रत्येक शब्द का क्या अर्थ है? उनका आवर्ती उपयोग उनके अर्थ को कैसे उजागर करता है? ये विषय एक-दूसरे से कैसे संबंधित हैं, और वे एक-दूसरे को कैसे रोशन करते हैं? लेखक ने इन शब्दों का इस तरह उपयोग क्यों किया, और उसने इन अवधारणाओं को एक-दूसरे से उसी तरह क्यों जोड़ा है, और इसके निहितार्थ क्या हैं? फिर, मुझे लगता है, हमारे पास एक आवर्ती विरोधाभास है जिसका संबंध इस तथ्य से है कि मैं बार-बार विरोधाभास की पुनरावृत्ति, तुलना की पुनरावृत्ति कहता हूँ, जिसका संबंध इस तथ्य से है कि बार-बार, पीटर ईसाइयों की नियति की तुलना नियति से करता है ईसा मसीह का। ईसाइयों को चुना जाता है, नियत किया जाता है और बुलाया जाता है।

ध्यान दें कि कैसे यह वर्णन ईसाइयों के लिए बार-बार किया जाता है, लेकिन ईसा मसीह का भी उसी तरह वर्णन किया गया है। हालाँकि, ईसाइयों की नियति और मसीह की नियति के बीच तुलना की यह पुनरावृत्ति, विशेष रूप से धर्मी पीड़ा से महिमा की ओर आंदोलन में पाई जाती है। धर्मी पीड़ा से शाश्वत महिमा की ओर का आंदोलन ईसाइयों पर आधारित है, जैसा कि आप इन छंदों में देखते हैं, और पूरी किताब में इन अंशों में ईसा मसीह पर आधारित है।

और फिर, प्रश्न। ईसाइयों की नियति और ईसा मसीह की नियति के बीच निरंतरता के प्रमुख बिंदु क्या हैं, और इनमें से प्रत्येक मुख्य तत्व का अर्थ क्या है? ईसाइयों की नियति और ईसा मसीह की नियति के बीच का यह संबंध पीटर के ईसाई धर्म और ईसाई जीवन के बारे में उनकी समझ दोनों को कैसे उजागर करता है? पीटर ने ईसाइयों की नियति और ईसा मसीह की नियति के बीच इस निरंतरता को क्यों प्रस्तुत किया है, और यह निरंतरता क्यों मौजूद है? और हम पूछ सकते हैं, उनके अनुसार, यह महत्वपूर्ण क्यों है? और फिर, धार्मिक निहितार्थ। मुझे लगता है, हमारे पास 2.11 से 5.11 के भीतर, इंस्ट्रुमेंटेशन के साथ एक विशिष्टता भी है, और मुझे यहां देखने दीजिए।

अब फिर से, आप आपत्ति कर सकते हैं, कह सकते हैं, ठीक है, यह केवल एक सबयूनिट से संबंधित है, वास्तव में, ब्रेकडाउन में, लेकिन ऐसा होता है कि यह सबयूनिट पुस्तक में आधे से अधिक सामग्री को नियंत्रित करता है। पुस्तक की आधी से अधिक सामग्री में पाया जाने वाला कोई भी संरचनात्मक संबंध पुस्तक की व्यापक संरचना से संबंधित है और इसलिए, हमारा मानना है, कि पुस्तक सर्वेक्षण में इसका उल्लेख किया जाना चाहिए। लेकिन 2:11 से 5:11 में विशिष्ट स्थितियों से संबंधित उपदेशों के भीतर, हमारे पास इस सामग्री के भीतर सामान्य से

विशेष तक एक आंदोलन है, इसलिए वह 2:11 और 12 में कहते हैं, प्रिय, मैं तुमसे विदेशी और निर्वासित के रूप में विनती करता हूँ, और वैसे, फिर से, इस परिच्छेद में ध्यान दें, वह 1:1 से निर्वासन भाषा को चुनता है। प्रिय, मैं आपसे विदेशी और निर्वासित के रूप में विनती करता हूँ कि आप शरीर के उन जुनून से दूर रहें जो आपकी आत्मा के खिलाफ युद्ध छेड़ते हैं।

अन्यजातियों के बीच अच्छा आचरण बनाए रखें ताकि यदि वे आपके खिलाफ गलत काम करने वालों के रूप में बोलें, तो वे आपके अच्छे कामों को देख सकें और दण्ड के दिन परमेश्वर की महिमा कर सकें। तो, विशेष रूप से शरीर के जुनून से दूर रहने का यह व्यवसाय, अपनी आत्मा के खिलाफ युद्ध छेड़ना, अन्यजातियों के बीच अच्छा आचरण बनाए रखना, आपके अच्छे कार्यों को देखने के लिए उनका संदर्भ, यह सब वास्तव में हमारे द्वारा दिए गए विशिष्ट उपदेशों में विशिष्ट है। 2:11 से 5:11 तक। वे इस बात का विवरण देते हैं कि शरीर के जुनून से दूर रहने में क्या शामिल है। वे इंगित करते हैं कि विशेष रूप से या विशेष रूप से क्या शामिल है, अन्यजातियों के बीच अच्छे आचरण को बनाए रखने की विशिष्ट सामग्री और अन्यजातियों के बीच अच्छे कर्मों का वह वहां उल्लेख करता है।

लेकिन, निश्चित रूप से, आपके पास यहां उद्देश्य का एक बयान भी है जो संपूर्ण 2:11 से 5:11 तक संबंधित है। अन्यजातियों के बीच अच्छा आचरण बनाए रखें ताकि यदि वे आपके खिलाफ अत्याचारी के रूप में बात करें, तो वे आपके अच्छे कामों को देख सकें और दण्ड के दिन परमेश्वर की महिमा कर सकें। यह उस प्रकार के जीवन का उद्देश्य है, जिस प्रकार का व्यवहार वह 2:13 से 5:11 तक सुझाता है। निःसंदेह, एक बात जिस पर यह जोर देता है वह शत्रुतापूर्ण और सामाजिक संदर्भ है जिसमें इस प्रकार का जीवन जीना पड़ता है। प्रश्न? निश्चित।

सबसे पहले, 2:11 से 12 में एक सामान्य उपदेश को 2:13 से 5:11 में विशिष्ट स्थितियों के संबंध में विशेष उपदेशों में किस सटीक तरीके से वर्णित या विस्तारित किया गया है? एक सामान्य उपदेश और 2:11 और 12 का उद्देश्य कथन इन निर्देशों को कैसे उजागर करते हैं? इस प्रकार पीटर ने 2:13 से 5:11 तक के इन विशिष्ट निर्देशों को 2:11 और 12 के सामान्य उपदेश और वहां के उद्देश्य कथन के ढांचे के भीतर क्यों निर्धारित किया है? और फिर, इसके निहितार्थ क्या हैं? फिर, मुझे लगता है, हमारे यहां संभवतः सामान्यीकरण है। कहने का तात्पर्य यह है कि, 5:12 पूरी पुस्तक के प्रमुख विषयों या चिंताओं को समाहित करने वाला एक सामान्य कथन हो सकता है। 5:12 में हम पढ़ते हैं, सिलवानुस द्वारा, जैसा कि मैं उसे एक वफादार भाई मानता हूँ, मैंने आपको संक्षेप में लिखा है, उपदेश और घोषणा करते हुए कि यह भगवान की सच्ची कृपा है।

इसमें तेजी से खड़े हो जाओ. यह वास्तव में संक्षेप में 1 पतरस की पुस्तक हो सकती है। उपदेश देना और घोषणा करना।

ध्यान दें कि वह यहाँ संकेत और अनिवार्य दोनों को चुनता है। उपदेश देना और घोषणा करना कि यह ईश्वर की कृपा है। निःसंदेह, यह संकेतात्मक होगा।

इसमें तेजी से खड़े हो जाओ. संयोग से, यदि वास्तव में यह यहाँ एक सामान्य कथन है, तो यह एक ऐसे विषय पर प्रकाश डालता है जिसे अन्यथा हम पुस्तक के भीतर इसके महत्व के संदर्भ में चूक गए होंगे, और वह है अनुग्रह। यह ईश्वर की सच्ची कृपा है।

वह सामान्यीकरण करता है, संकेत को समाहित करता है, अनुग्रह करता है, और फिर अनिवार्यता को, अनुग्रह में, उसमें दृढ़ता से खड़ा होता है। तो, 5:12 पुस्तक के प्रमुख मुद्दों को कैसे समाहित करता है और इन मुद्दों पर प्रकाश डालता है? लेखक ने इस प्रकार अपनी पुस्तक का समापन इस सामान्य सार-संक्षेप के साथ क्यों किया है, और इसके निहितार्थ क्या हैं? अब, निश्चित रूप से, हमने उल्लेख किया है कि प्रमुख छंदों या रणनीतिक क्षेत्रों की पहचान करना महत्वपूर्ण है, और इन्हें स्पष्ट रूप से उन प्रमुख संरचनात्मक संबंधों का प्रतिनिधित्व करना चाहिए जिन्हें हमने देखा है ताकि पुस्तक के हमारे उपचार के संदर्भ में सबसे रणनीतिक मार्ग वास्तव में सामने आएँ, द्वारा सुझाए गए हैं, पुस्तक की गतिशीलता ही। तो, 1 :1 और 2, निस्संदेह, प्रारंभिक विवरण और सामान्य विवरण का प्रतिनिधित्व करते हैं।

1:13 कार्य-कारण का प्रतिनिधित्व करता है। यह बिलकुल शुरुआत में है. यह उस महान सांकेतिक कथन से उपदेशों में परिवर्तन और पुस्तक के उपदेश की शुरुआत है, इसलिए, अपने दिमाग को मजबूत करें, शांत रहें, अपनी आशा स्थापित करें।

वैसे, एक बार फिर, इस पुस्तक में आशा का महत्व इस तथ्य से पता चलता है कि पहला उपदेश आशा से संबंधित है, और संयोग से, श्लोक 13 में ग्रीक की व्याकरणिक संरचना के संदर्भ में, अपनी आशा निर्धारित करें एक मुख्य क्रिया है, इसलिए अन्य अनिवार्यताएं, या जिसे आरएसवी कम से कम अनिवार्यता के रूप में अनुवादित करता है, वे कृदंत हैं। तो, आपके पास वास्तव में एक मुख्य क्रिया है। श्लोक 13 का मुख्य बिंदु आशा है।

इसलिए, वास्तव में, आप इसका अनुवाद कर सकते हैं, इसलिए, अपने दिमाग को मजबूत करके और शांत होकर, अपनी आशा पूरी तरह से अनुग्रह पर रखें। वैसे, फिर से, अनुग्रह, जिसे हमने पुस्तक के अंत में संभवतः उस व्यापक कथन में पाया, आपकी आशा को पूरी तरह से उस अनुग्रह पर स्थापित करता है जो यीशु मसीह के रहस्योद्घाटन पर आपके पास आ रहा है। 1:14 से 16, निश्चित रूप से, विशिष्टता का प्रतिनिधित्व करेगा क्योंकि यह हमारे पास मौजूद सामान्य उपदेश का केंद्र है, 1:13 से 2:11 में जो उपदेश हैं, लेखक आगे बढ़ता है और निर्दिष्ट करता है और विशिष्ट सामग्री देता है जैसा कि वह इसे 2:11 में विशिष्ट स्थितियों पर लागू करता है और इसके बाद, आज्ञाकारी बच्चों के रूप में आपके पूर्व अज्ञान के जुनून के अनुरूप नहीं होते हैं, लेकिन जिसने आपको बुलाया है वह पवित्र है, अपने सभी आचरण में पवित्र रहें। 2:11 और 12, निश्चित रूप से, उपकरणिकरण के साथ विशिष्टता का प्रतिनिधित्व करते हैं, जिसे हमने कुछ ही क्षण पहले देखा था कि वह वास्तव में 2:11 से 5:11 के बीच वहां प्रस्तुत करता है।

वह सामान्य, अधिक सामान्य शब्दों में, पवित्रता के आह्वान से अधिक विशिष्ट, लेकिन 2:13 से 5:11 तक की तुलना में अधिक सामान्य रूप से बोलना शुरू करता है, अपनी आत्मा के खिलाफ युद्ध छेड़ने के जुनून से दूर रहें, अच्छा आचरण बनाए रखें अन्यजातियों के बीच, और निश्चित रूप से, फिर वह आगे बढ़ता है और 2:13 और उसके बाद की विशिष्ट स्थितियों में इसे लागू करने के

संदर्भ में विशिष्ट करता है, और उद्देश्य का बयान जो पुस्तक के बाकी हिस्सों में उपदेशों पर खड़ा होता है ताकि यदि वे तुम्हारे विरुद्ध अत्याचारी होकर बातें करते हैं, तो ये अन्यजाति भी तुम्हारे विरुद्ध अत्याचारी होकर बातें करते हैं, वे तुम्हारे अच्छे कामों को देख सकते हैं और दण्ड के दिन परमेश्वर की महिमा कर सकते हैं। और फिर, निःसंदेह, 4:19 पीड़ा की पुनरावृत्ति का प्रतिनिधित्व कर सकता है; इसलिए, जो लोग परमेश्वर की इच्छा के अनुसार कष्ट सहते हैं वे सही कार्य करें और अपनी आत्माएँ एक वफादार निर्माता को सौंप दें। मुझे लगता है कि यह वास्तव में पीटर के पीड़ा के उपचार के प्रमुख पहलुओं को उजागर करता है और इसलिए, एक रणनीतिक क्षेत्र के रूप में एक योग्य संभावना है जो पुस्तक में पीड़ा की पुनरावृत्ति का प्रतिनिधित्व करता है।

और 5:12, निःसंदेह, संभवतः सामान्य कथन हो सकता है, और इसलिए, यह पुस्तक में एक सामान्यीकरण का प्रतिनिधित्व करता है। अब, आप जानते हैं, मैंने पहले उल्लेख किया था कि रणनीतिक क्षेत्रों की पहचान करने का उद्देश्य, एक उद्देश्य, हमारे व्याख्यात्मक ध्यान को केंद्रित करना है, जब समय सीमित है, हमारे व्याख्यात्मक ध्यान को उन अनुच्छेदों पर केंद्रित करना है, उन अनुच्छेदों की व्याख्या करना है क्योंकि वे सबसे महत्वपूर्ण हैं पुस्तक में, और उन्हें इस तरह से व्याख्या करें कि यह दिखाया जा सके कि ये मुख्य अंश किस प्रकार संपूर्ण पुस्तक के प्रमुख पहलुओं को आगे बढ़ा सकते हैं और प्रकाशित कर सकते हैं। अनुमान के अनुसार, इस सर्वेक्षण के समाप्त होने के कुछ ही मिनटों में, हम बिल्कुल यही करने जा रहे हैं ; हम 1:1 की व्याख्या प्रदान करके इसका एक उदाहरण देने जा रहे हैं।

हमने इसे इसलिए चुना क्योंकि यह एक रणनीतिक क्षेत्र है, इसलिए हम यह स्पष्ट करने जा रहे हैं कि व्याख्या करने में क्या शामिल है, एक प्रमुख श्लोक या रणनीतिक क्षेत्र को लेना और उसकी व्याख्या इस तरह से करना जिससे हमें पुस्तक के एक प्रमुख पहलू तक पहुंचने में मदद मिल सके। पूरा। अब, पुस्तक के भीतर डेटा के संदर्भ में, हम इस बिंदु पर पुस्तक के द्वितीयक स्रोतों से बाहर नहीं जा रहे हैं। ऐसा करने के लिए एक जगह है।

जैसा कि मैंने पहले उल्लेख किया है, मेरी रुचि पुस्तक के आंकड़ों से इस ऐतिहासिक पृष्ठभूमि की समझ को प्राप्त करने या प्राप्त करने के द्वारा हम जो कर सकते हैं वह करने की है, फिर तुरंत आगे बढ़ने और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के संबंध में विद्वानों के उपचारों को पढ़ने की है। लेकिन मैंने अभी तक ऐसा नहीं किया है. यह सर्वे का हिस्सा है.

ये ऐसी चीज़ें हैं जिन्हें हम पुस्तक के डेटा से ही इन उच्च महत्वपूर्ण प्रश्नों के बारे में समझ सकते हैं। लेखक के संबंध में, वह निश्चित रूप से, अपनी पहचान पीटर के रूप में बताता है। बाद में, 5-1 में, वह स्वयं को साथी बुजुर्ग कहलाएगा।

इसलिए, मैं तुम्हारे बीच के बुजुर्गों को एक साथी बुजुर्ग के रूप में प्रोत्साहित करता हूँ। यह, यह पतरस संभवतः, यीशु का शिष्य पतरस है। 1:1 में उसकी पहचान प्रेरित के रूप में की गई है।

और वह कहता है कि वह 5:1 में मसीह के कष्टों का गवाह था। मैं आपके बीच के बुजुर्गों को एक साथी बुजुर्ग और मसीह के कष्टों के गवाह के रूप में प्रोत्साहित करता हूँ। पुराने नियम से पूरी

तरह परिचित होने के कारण, वह भविष्यवक्ताओं का उल्लेख करता है, कई अवसरों पर पुराने नियम के उद्धरण देता है, और पुराने नियम के पात्रों का उल्लेख करता है।

प्राप्तकर्ताओं के संबंध में, वे यहूदी रहे होंगे। उनकी पहचान फैलाव के निर्वासितों के रूप में की जाती है। और निस्संदेह, आपके पास पुराने नियम के अंशों और अवधारणाओं का बार-बार संदर्भ है।

मैं बस यह कहना चाहता हूँ कि पुराने नियम के अंशों और अवधारणाओं का ये बार-बार संदर्भ यहूदी दर्शकों की ओर इशारा नहीं करता है। यह बहुत दिलचस्प है कि न्यू टेस्टामेंट की शायद ही कोई किताब हो जो पुराने टेस्टामेंट को संदर्भित करने के मामले में गलाटियंस की तुलना में अधिक निर्भर हो या जिसमें अधिक संकेत हों। और फिर भी, गैलाटियन्स स्पष्ट रूप से एक गैर-यहूदी, कम से कम लगभग पूरी तरह से गैर-यहूदी, दर्शकों के लिए लिखा गया है।

अन्यजाति ईसाई पुराने नियम को जानते थे। यह उनका धर्मग्रंथ था और वे इसे अच्छी तरह जानते थे। अब, यहां ऐसे आंकड़े हैं जो सुझाव देते हैं कि वे अन्यजाति रहे होंगे।

ध्यान दें कि वह उनकी पूर्व अज्ञानता के जुनून का संदर्भ देता है, यह सुझाव देता है कि वे भगवान को किसी भी वास्तविक तरीके से नहीं जानते थे, कि उनका जीवन अज्ञानता में बीता था। यह उनके पिताओं से विरासत में मिले सामंती तौर-तरीकों के बारे में भी बात करता है। फिर, सतह पर, यह ऐसी भाषा नहीं लगती जिसे यहूदियों को संबोधित किया जाएगा।

यह असंभव है, कम से कम प्रथम दृष्टया, यह असंभव है कि कोई लेखक यहूदी पिताओं का उल्लेख करेगा, जैसा कि मैं कहता हूँ, यहूदी धर्म के कुलपतियों और पिताओं और उनके तरीकों को सामंती के रूप में संदर्भित करेगा। 2:10 में, वह उनके संबंध में कहता है, एक समय तुम लोग नहीं थे, परन्तु अब तुम परमेश्वर के लोग हो। और फिर, 2:12 में, वह उनसे अन्यजातियों के बीच अच्छा आचरण बनाए रखने का आग्रह करता है।

ऐसा हो सकता है कि वह यहां अन्यजातियों का उपयोग धार्मिक तरीके से कर रहा है, यानी, अच्छा, संकेत दे रहा है, ठीक है, मुझे इसे इस तरह से रखना चाहिए। हो सकता है कि वह यहां यह संकेत दे रहा हो कि वे निस्संदेह अन्यजातियों के बीच रहते हैं। निःसंदेह, इसका अर्थ यह निकाला जा सकता है कि वहाँ यहूदी हैं, अन्यजाति नहीं।

लेकिन दूसरी ओर, यह सोचने का कारण हो सकता है कि यद्यपि वे बने रहेंगे, वास्तव में, वे जातीय रूप से गैर-यहूदी हैं, अब उन्हें भगवान की कृपा में लाया गया है, अब जब उन्हें ईसाई समुदाय में लाया गया है, वे वास्तव में इज़राइल से किए गए वादों के उत्तराधिकारी हैं और इसलिए, एक अर्थ में, कुछ अर्थों में यहूदी हैं, धार्मिक रूप से यहूदी, आध्यात्मिक रूप से यहूदी, यदि जातीय रूप से यहूदी नहीं हैं। इसके अलावा, 2:25 में वह फिर से कहता है, एक समय, आप भेड़ की तरह भटक रहे थे। और 4:3 में, वह कहता है, जो समय बीत गया है वह अन्यजातियों को जो करना पसंद है उसे करने के लिए पर्याप्त हो, व्यभिचार, जुनून, नशे, मौज-मस्ती, मौज-मस्ती और अराजक मूर्तिपूजा में रहना।

दूसरे शब्दों में, वह जो कह रहा है वह यह है कि आप इसी तरह रहते थे, जिसमें अराजक मूर्तिपूजा भी शामिल है। जैसा कि मैं कहता हूँ, यह एक मूर्तिपूजा है जो कानून न होने से उत्पन्न होती है। वे आश्चर्यचकित हैं कि अब आप उनके साथ उसी जंगली फिजूलखर्ची में शामिल नहीं होते हैं, और वे आपके साथ दुर्व्यवहार करते हैं, जैसा कि हमने अभी 4:4 में बताया है। और फिर, यहां 1:14 से 4:2 तक जुनून से बचने का संदर्भ भी है। अब, ये स्पष्ट रूप से ईसाई थे, और कुछ निश्चित तरीकों से वर्णित ईसाई थे, और मैं वास्तव में यह सब नहीं पढ़ंगा, लेकिन आप देख सकते हैं कि यह समझने के मामले में यह कैसे बहुत उपयोगी हो सकता है कि ये लोग कौन थे, या कम से कम लेखक ने प्राप्तकर्ताओं को कैसे समझा।

हालाँकि, यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि वे अपने गैर-यहूदी पड़ोसियों और पूर्व साथियों के हाथों ईसाई धर्म में अपने पवित्र जीवन के लिए अन्यायपूर्ण उत्पीड़न सह रहे थे। तो, वह वास्तव में धार्मिकता के लिए कष्ट सहने की बात करता है। उनका कहना है कि उन्हें उस आशा के लिए बचाव करने के लिए तैयार रहना चाहिए जो उनमें है, कि उन्हें नम्रता और श्रद्धा के साथ खुद का बचाव करने के लिए तैयार रहना चाहिए, और अन्यजातियों द्वारा उनका दुरुपयोग किया जाता है क्योंकि वे अब अपने व्यभिचार में संलग्न नहीं हैं।

वह उस अग्निपरीक्षा का संदर्भ देता है जिसका वे अनुभव कर रहे हैं, और वह इस तथ्य का संदर्भ देता है कि उन्हें भगवान की इच्छा के अनुसार कष्ट सहने की आवश्यकता हो सकती है, या शायद वे कष्ट उठा रहे हैं, और उन्हें चेतावनी दी जाती है कि वे कष्ट को अजीब न समझें। हो सकता है कि वे कुछ आध्यात्मिक समस्याओं से गुज़र रहे हों। इसमें अनिच्छा से आतिथ्य सत्कार का अभ्यास करने का संदर्भ है, लेकिन फिर से, मैं हमें इस तरह की चीज़ के सिद्धांत की याद दिलाता हूँ।

इसे नए नियम के पत्रों का दर्पण वाचन कहा जाता है। सिर्फ इसलिए कि वह उनसे अनिच्छा से आतिथ्य सत्कार करने का आग्रह करता है, इसका मतलब यह नहीं है कि वे ऐसा नहीं करते हैं, लेकिन यह एक प्रकार की समस्या की ओर इशारा कर सकता है। यहां विभाजित घरों का संदर्भ है, एक ऐसा मामला जहां पत्नी आस्तिक है, और पति अविश्वासी है।

विनम्र दिमागों के संदर्भ में, फिर से, विनम्रता एक मुद्दा रही होगी। स्वेच्छा से या लाभ के लिए ईश्वर के झुंड की देखभाल करने वाले बुजुर्गों का संदर्भ। फिर, यह एक मुद्दे की ओर इशारा कर सकता है, और युवाओं को बड़ों के अधीन रहने का उपदेश भी दे सकता है।

अब, यहां प्राप्तकर्ताओं, दर्शकों में दास और अमीर दोनों शामिल हो सकते हैं। ऐसा लगता है कि यहां प्राप्तकर्ताओं के बीच एक व्यापक सामाजिक-आर्थिक आबादी है। 2:18 के अनुसार, कुछ नौकर थे, अर्थात् दास।

इनमें से कुछ दास दबंग स्वामियों से पीड़ित थे। नाशवान और अविनाशी के बीच एक अंतर बनाया जाता है, और वह वस्तुओं या धन के बहुत महत्वपूर्ण मूल्यवर्ग का उपयोग करता है। फिर, इससे पता चलता है कि वहां दर्शकों के बीच धन-संपदा रही होगी।

और वह उनके अच्छे कपड़े पहनने और बाल गूथने आदि का संदर्भ देता है, फिर से, उनके बीच अमीर होने का सुझाव देता है। हो सकता है कि उन्हें सुसमाचार सेकेंडहैंड प्राप्त हुआ हो।

उन्होंने ईसा मसीह को कभी नहीं देखा था। अब, आपके यहाँ निश्चित रूप से दूसरी पीढ़ी के ईसाई हैं। और उन्होंने मनुष्यों के प्रचार के माध्यम से, शायद एक से अधिक प्रचारकों के माध्यम से सुसमाचार प्राप्त किया था।

इसलिए, वह 1:12 में कहता है, यह बात उन पर, अर्थात् भविष्यवक्ताओं पर प्रगट की गई, कि वे अपनी नहीं, परन्तु तुम्हारी ही सेवा करते थे, और जो बातें अब उन लोगों ने तुम्हें बता दी हैं, जिन्होंने सुसमाचार सुनाया था। तू ने पवित्र आत्मा के द्वारा स्वर्ग से कहा। वह 1:25 में पुनः इसका संदर्भ देता है, वह वचन एक शुभ सन्देश है जो तुम्हें उपदेश दिया गया था। और फिर लेखन के स्थान के संदर्भ में, 5:13 में बेबीलोन का उल्लेख किया गया है, यहां कहा गया है, वह जो बेबीलोन में है, जो इसी तरह चुनी गई है, आपको नमस्कार भेजती है।

अब, हमें पता चला है, और निश्चित रूप से, हम सभी एक निश्चित प्रकार की पृष्ठभूमि के साथ इन आंकड़ों पर आते हैं, कि अक्सर बेबीलोन रोम के लिए एक सिग्नल था। और इसलिए शायद सवाल यह है कि क्या यह रोम से लिखा गया था। यदि, वास्तव में, बेबीलोन से उसका तात्पर्य रोम से है।

वह सम्राटों और राज्यपालों का भी संदर्भ देता है। तो, स्पष्ट रूप से, वह यहाँ शाही सोच में बंधा हुआ है। बेशक, यह अपने आप में पुस्तक की किसी विशिष्ट उत्पत्ति की ओर इशारा नहीं करता है।

हालाँकि, गंतव्य स्पष्ट कर दिया गया है। पोंटस, गैलाटिया, कप्पाडोसिया, एशिया, बिथिनिया, यह वास्तव में एक सामान्य पत्र है। यह वास्तव में इस बड़े हिस्से में, एशिया माइनर के इस विशाल विस्तार में चर्चों को भेजा जाता है।

इसमें आज के तुर्की का एक बड़ा हिस्सा शामिल है। लिखने का अवसर, निश्चित रूप से वे उत्पीड़न के दौर से गुजर रहे थे। और हो सकता है कि वह इसे संबोधित करना चाहता हो।

निःसंदेह, इसका संबंध पुस्तक में पीड़ित भाषा की पुनरावृत्ति से है। संभवतः इस उत्पीड़न के कारण उन्हें फिर से पाप में गिरने का खतरा था। वह निश्चित रूप से इस तरह की चीजों के बारे में चेतावनी देते हैं और उन्हें इसके खिलाफ तैयार करते दिखते हैं या उन्हें इस तरह की प्रतिक्रिया के खिलाफ एक तरह के संसाधन देते नज़र आते हैं।

संभवतः इन परीक्षाओं के तथ्य से चिंतित और हिले हुए, वह यहां 4:12 में कहते हैं, प्रियों, उस अग्निपरीक्षा पर आश्चर्यचकित मत होइए जो आप पर आती है ताकि यह साबित किया जा सके कि आपके साथ कुछ अजीब हो रहा है। संभवतः लोगों में विनम्रता और अधीनता की निश्चित कमी है। फिर, यह एक जोर है।

और संभवतः चर्च के कुछ बुजुर्ग झुंड के प्रति प्रेम के बजाय व्यक्तिगत लाभ के आधार पर कार्य कर रहे थे। ये सब बातें शायद अवसर रही होंगी। कहने का तात्पर्य यह है कि इस पुस्तक के निर्माण के लिए किसने प्रेरित किया?

एक और प्रमुख धारणा यह है कि पुस्तक की विशेषता वास्तव में आशा का स्वर है। हम ध्यान देते हैं, हालाँकि वहाँ भी उद्देश्य कथनों का बार-बार उपयोग होता है। और मैं यहाँ प्रारूप के लिए माफी मांगता हूँ।

ये तो हिना और हापोस होना चाहिए। ये उद्देश्य को इंगित करने के तरीके हैं, हालाँकि वे सीधे या भौतिक रूप से एक-दूसरे से संबंधित नहीं हैं, इसलिए यह वास्तव में उपकरण की पुनरावृत्ति नहीं है। दूसरे शब्दों में, आपके पास हर जगह एक ही साधन और एक ही साध्य नहीं है।

तो, यह वास्तव में एक संरचनात्मक संबंध के रूप में उपकरण की पुनरावृत्ति नहीं है, बल्कि यह एक शैलीगत प्रकार की चीज़ है जो बार-बार, विभिन्न तरीकों से, इसके या उसके उद्देश्य के बारे में बात करना पसंद करती है। तो ये है किताब का सर्वे। मुझे लगता है कि यह रुकने का अच्छा समय था।

अभी और अगले वीडियो सेगमेंट की शुरुआत के बीच, एक बार फिर से देखें; 1:1 और 2 को पढ़ने के लिए बस कुछ मिनटों का समय लें क्योंकि हम आगे बढ़ेंगे और थोड़े से समय में उस अनुच्छेद की व्याख्या प्रस्तुत करेंगे।

यह डॉ. डेविड बोवर आगमनात्मक बाइबिल अध्ययन पर अपने शिक्षण में हैं। यह सत्र 28, 1 पीटर, पुस्तक सर्वेक्षण है।